International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

"भरतपुर किले की स्थापत्य कला का सैनिक दृष्टि से एक अध्ययन"

Dr Harish kumar
Art department
Manglaytan University Aligarh.

सारांश : आज बृज क्षेत्र में सैकड़ों की संख्या में छोट–बड़े जाट शासन कालीन किले/घड़ियाँ देखने को मिलती हैं। इन किलों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रत्येक किला उस समय की युद्ध रणनीति के अनुकूल ही बनाया गया था इन प्रत्येक किलों की स्थापत्य कला में यह ध्यान रखा जाता था कि शत्रु के आक्रमण के समय शत्रु सेना पर अधिक से अधिक फायर किये जा सके और अपनी सेना को अधिक से अधिक सुरक्षा दी जा सके। यह किस तरह यहाँ की स्थापत्य कला थी इसका जीता जागता उदाहरण आज भरतपुर के किले में देखने को मिलता है जो इस प्रकार है। 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यह भू–खण्ड संघन जंगल, कांटेदार झाड़ी तथा पानी के जमाव से असुरक्षित था और रूपारेल, वान गंगा नामक दो वरसाती नदियाँ इस भू–भाग में वहती थी। इस भूखण्ड पर 18वीं सदी के प्रथम दशक में खेमकरन सोगारिया ने महात्मा नागा। की अनुकम्पा से एक अति ऊँचे टीले पर फतहपुर या फतेहगडी नामक गड़ी का निर्माण किया था।

मुख्य शब्द : भरतपुर किले की स्थापत्य कला और आधुनिक सैनिक छावनी एक है

प्रस्तावना

1733 ई0 में सूरजमल जाट ने इस फतेहगड़ी पर अधिकर कर इसको नष्ट कर दिया।[1] परन्तु सूरजमल इस स्थान की उपयोगिता को समझ गया था। इसलिये उसने यहाँ 1743 ई0 को एक विशाल दुर्ग की नींव डाली जिसका नाम भरथपुर (मर्थपुर–भरतपुर) रखा गया था यह नगर 8 वर्षों में बनकर तैयार हो गया था। सर्वप्रथम यह एक कच्चा दुर्ग था। इसमें आठ बुर्ज तथा चारों ओर 30 फुट गहरी, 200 से 250 फुट चौडी खाई है जिसको सुचान गंगा नहर कहते हैं। वैसे तो इस किले के प्रत्येक अंग का वर्णन अति आवश्यक है लेकिन इस शोध पत्र में संम्भव नहीं है फिर भी इस कले के 8 प्रमुख बुर्जों एवं दरबाजों का युद्ध में अपना स्थान होता था जो इस प्रकार है।[2]

1. **उत्तर–पश्चिम में जवाहर बुर्ज** – इस बुर्ज पर जवाहर सिंह ने एक बारहदरी तथा महल का निर्माण कराया था। इससे इसका नाम जवाहर बुर्ज पड़ा था। इस बुर्ज पर आज भी एक हल्की तोप रखी हुई है।

2. **पश्चिम में खानदौरान खां या लाला वाला बुर्ज** – इस बुज पर खानदौरान खां गोलन्दाज जमादार का डेरा था। यह अत्यन्त विशाल बुर्ज है और यह बुर्ज युद्ध के समय जाट सेना के प्रमुख स्थलों में से एक होता था।

3. **दक्षिण–पश्चिम में जेठमल सूर्यद्विज बुर्ज** – इसका निर्माण जेठमल सूर्यद्विज ने करवाया था। बाद में इस पर सिनसिना नामक एक दीर्घ तोप चड़ास दी गई थी और यह बुर्ज सिनसिना कहलाने लगा। यह तोप आज भी सुरक्षित रखी है। आज यह समझा जा सकता है कि यह तोप शत्रु का किस तरह से नास करती होगी।

4. **बागड़ वाली बुर्ज** – इसके नीचे घास की बामार का कारखाना रहता था। इस बुर्ज से युद्ध के समय घोड़े व हाथियों को घास मिलती थी।

5. **दक्षिण–पूर्व में नवल बुर्ज** – महाराजा केहरीसिंह के शासन काल में 1760 ई0 में नायब नवलसिंह ने इस बुर्ज पर एक पक्की हवेली बनवाई थी, इससे इसका नाम नवल सिंह बुर्ज पड़ गया था। यह आज भी यथास्थिति में खड़ा है।

6. **पूर्व में भैंसा बुर्ज** – कहा जाता है कि जब यह बुर्ज तैयार की गई और एकाएक ही ढह गई थी। इसके पुनः निर्माण के लिये एक साधु के आग्रह पर इस स्थान पर एक भैसे की बलि दी गई थी। इसके बाद ही यह बुर्ज बनकर तैयार हो पाया था। इस बुर्ज पर किले में गस्त रकने वाली सेना की टुकड़ी का निवास स्थान था।

7. **पूर्वोत्तर में गोकुलराम बुर्ज** – इस बुर्ज पर रिसालदार गोकुलराम अपने सवार तथा भारवाहक गाड़ियों के साथ रहता था। यह अत्यन्त ऊँचा बुर्ज वह विशाल बुर्ज है।

8. **उत्तर में कालिका बुर्ज** – इस बुर्ज पर कालिका देवी की पूजा होती थी। इन बुर्जों के बाद पक्के दुर्ग का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया था। इस दुर्ग की दीवार लगभग दस फुट

चौड़ी तथा जल धरातल से 70 फुट ऊँची 51 बुर्ज तथा प्राचीरों से सुरक्षित है। इन बुर्जो का विवरण इस प्रकार मिलता है।

1. **चौबुर्जा** – चार बुर्ज तथा चार दरबाजे – (1) चौबुर्जा दरबाजा (2) इस द्वार के अन्दर घूंघस में पूर्व तथा पश्चिम की ओर दो दरबाजे तथा एक दरबाजा अपूर्ण बना है।
2. **किसनपोल दरबाजा** – दो नाली बुर्ज तथा धूंधस से राज राजेश्वर महादेव तथा पाँच बुर्ज इस दरबाजे से जुड़े हुऐ है।
3. **जेठमल बुर्ज से जवाहर बुर्ज तक** – सात तैयार तथा एक अधूरी बुर्जो को आज भी देखा जा सकता है।
4. **गोपालगढ़ की ओर चार दरवाज़े** – (1) भ्रष्टधाती दरबाजे के अन्दर धूंधस में एक दरबाजा (2) कैथन (कैतवाला) दरबाजा (3) फूलवाड़ी दरबाजा और (4) एक अधूरा दरबाजा है।

23 बुर्ज – गोपाल पोल से गोकुलराम बुर्ज तक ग्यारह बुर्ज, दस बुर्ज गोकुलराम बुर्ज से नवल बुर्ज तक, बुर्ज धूंधस तथा एक गोकुलराम बुर्ज, इसके अतिरिक्त दुर्ग में एक कच्चा एक पक्का कुण्डा भी तैयार किया गया था। इसी समय किले के अन्दर किशोरी महल, मन्दिर श्री बिहारी जी तथा महलात कचहरी का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ था। इन बुर्जों के आधार पर कहा जा सकता है कि भरतपुर किला युद्ध तकनीक के कितने अनुकूल था इस किले का प्रत्येक बुर्ज युद्ध के समय काम में लाया जाता था। इन बुर्जों के आधार पर ही यह किला अपने समकालीन सुद्रर्ण दुर्गों से अलग था।[3]

नगर प्रकार तथा दरवाजों का विवरण

1753 ई0 में कुवर सूरजमल भरतपुर में आकर निवास करने लगे थे यद्यपि इस समय तक दुर्ग का निर्माण कार्य सम्भवतः सम्पन्न हो चुका था, परन्तु नगर का प्रकार (शहर पनाह था चहार दीवार) प्रारम्भ नहीं हो सकी थी। इसी समय कुम्हेर पर मराठों ने आक्रमण कर दिया था। अतः सूरजमल ने दुर्ग के नागरिकों को जंगलों के बीच में बसाकर भ्रबी, बुर्ज तथा परिखा बनाकर सुरक्षा प्रदान की। इससे समझा जा सकता है कि भारत देश में सैंकड़ों छोटे बड़े दुर्ग, गढ़ी सदियों से अपनी शौर्य

गाथाऐं सुनाने के लिये आज भी खड़े हैं किन्तु इन सब में केवल भरतपुर का यह लोहागड़ ही अपराजिता रहा सका है। इस किले पर ब्रिट्रिश सरकार के सबसे बड़े फौजी जनरल लार्ड लैक ने सन् 1805 में चार बार आक्रमण किया और उसे मात खानी पड़ी। इस भरतपुर दुर्ग के अजेय रहने के केवल दो कारण रहे हैं। एक इसकी भौगोलिक स्थिति एवं विलक्षण बनावट और दूसरा महाराजा सूरजमल की हिन्दू धर्म की रक्षा और देश की स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ संकल्प, जिसमें भरतपुर के विस्तृत राज्य की समस्त जनता का उन्हें और उनकी सन्तति को तन, मन, धन से सहज सहयोग प्राप्त रहा था। इस किले का निर्माण मिट्टी के साथ चूने–पत्थर के मिश्रण के गोलाकार में बना हआ है।

मराठों के आक्रमण के बाद ही 2½ मील लम्बाई तथा दो मील चौड़ाई में नगर की संरचना की गई थी। नगर की सुरक्षा तथा शालीनता के लिए 18 फुट से 25 फुट चौडे, 60 फुट ऊँचे व्यवस्थित मिट्टी के प्रकार का निर्माण कराया गया था। धरातल में यह प्रकार (परकोटा) 30 से 60 फुट गहरी कच्ची खाई बनवाई गई थी। इसके किनारे लगभग 5 मील व्यास में 25 फुट चौड़ी एक पक्की गिटी की सड़क भी बनाई गयी थी। नगर में प्रवेश के लिये गोवरधन, अबीना, सूरजपोल, मथुरा, श्रीनारायन, भटलचन्द, नीभदा, धनाह, कुम्हेर और चांदपोल नामक आठ दरवाजे तथा दो पोल हैं। परकोटा की सुरक्षा के लिए 15 नाल बुर्ज, 17 पक्की बुर्ज, एक पक्का मरहला तथा एक गिरगज की संरचना की गई थी। जिनका ब्यौरा इस प्रकार मिलता है।[4]

(1) गोवरधन दरवाजे से जबीना दरवाजा तक –

I. बुर्ज परवतसिंह, इसमें कप्तान परवतसिंह का ढेरा रहता था।
II. बुर्ज चांदमारी, यहाँ पर चांदमारी का निशाना लगाया जाता था।
III. जघीना दरवाजा के ऊपर बुर्ज गिरसेनिया, इसमें गिरसा वाले का डेरा रहता था।

(2) जघीना दरवाजा से सूरजपोल दरवाजा तक (गोपालगढ़) –

I. गिरगज, इस पर दुर्ग भंजनी तोप चढ़ाई गई थी। अंग्रेज दुर्जनसाल युद्ध (1825 ई0) में इस स्थान से ही अंग्रेजी फौजों ने दुर्ग पर गोलाबारी की थी गोपालगढ़ स्थित दुर्ज दीबार तथा बुर्जों को भारी क्षति उठानी पढ़ी थी।

II. सूरजपोल दरवाजे के समीप बुर्ज कलां तथा नाल बुर्ज।

(3) सूरजपोल से मथुरा दरवाजे तक –

I. सूरजपोल दरवाजे के समीप केवल बुर्ज, इस पर केवल तोप रखी थी। इसके समीप ही एक मरहला बना हुआ था।

II. नवलगढ़ स्थित एक पक्का कलां नामक मरहला।

III. बुर्ज मरहला ध्यानदास वैरागी।

IV. बुर्ज ठाकुर चाँदसिंह, इस पर ठाकुर चाँदसिंह का डेरा रहता था।

(4) मथुरा दरवाजे से वीनारायन दरवाजे तक – (नवलगढ़ –)

I. बुर्ज भूदरवाला, इसमें चौधरी भूदरसिंह का डेरा युद्ध के समय रहता था।

II. बुर्ज सैयिदवाला, यहाँ पर प्राचीन समय से सैयिद का निवास था।

III. बुर्ज किसनराम, इस पर बख्शी किसनराम का डेरा रहता था।

IV. बुर्ज खुर्द वीनारायन, इस पर बलवान भोगरे जाट का डेरा था।

(5) वीनारायन से अटलबन्द तक –

I. बुर्ज भदौरिया, इसमें भदौरिया का डेरा तथा यहीं पर बाद में उसका निवास स्थान बन गया था।

II. बुर्ज विछोर वाला, इसमें राजा बिछोर का डेरा सेना साहित रहता था।

III. बुर्ज रंतौर, इसमें रंतीर खाँ का डेरा रहता था।

IV. बुर्ज, बड़वाला, इसके बीच में बड़ का वृक्ष था।

V. मोहन बुर्ज, इसमें मोहनराम वरसानिया का डेरा था।

VI. बुर्ज मोरी अटलबन्ध, इस मोरी बुर्ज से सुजान गंगा में पानी आता था।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

(6) धटलबन्ध से नीमदा दरवाजे तक (किसनगढ़) –

I. बुर्ज तेलीवाला, इसके समीप तेलियों का निवास था।

II. बुर्ज धतूरा वाला इसके वाह्यि पार्श्व में धतूरे के पौधे मिलते हैं।

III. बुर्ज देव वाला, इसके समीप देव का निवास था।

IV. बुर्ज नीमवाद खाँ, यह बुर्ज धूंधस में बना है, इससे धूंधस बुर्ज कहलाता है।

(7) नीमदा दरवाजे से अनाह दरवाजे तक (किसनगढ़) –

I. बुर्ज धवल वाला, इसमें ठाकुर धवलसिंह का डेरा था।

II. फतेह बुर्ज, 1805 ई0 में लार्ड लेक के विफल आक्रमण के बाद इसका नाम फतह बुर्ज रखा गया था।

III. बुर्ज किसनराम वाला, यह बुर्ज धूंधस के ऊपर है और इसमें बख्सी किसनराय का डेरा था। आजकल यहाँ पर लाल बहादुर शास्त्री पार्क बनाया गया है।

(8) अनाह से कुम्हेर दरवाजा तक (किसनगढ़) –

I. बुर्ज महाराजा बलदेव सिंह वाला।

II. बुर्ज पुरोहित वाला, इसमें करनसिंह पुरोहित का डेरा था।

(9) कुम्हेर से चाँदपोल तक (किसनगढ़) –

I. बुर्ज सराय वाला इसके समीप सराय थी। इस सराय में युद्धक सामग्री रहती थी।

II. बुर्ज गोशा या कौमा, यह बुर्ज कौने में बनी है।

III. बुर्ज अंबा (आम), इस पर भाग का वृक्ष था। परन्तु 1805 ई0 के युद्ध में इसको उखाड़ दिया गया था।

पूर्व शोध साहित्य का पुनर्रावलोकन –

1.एम. अतहर अली : The Mughal Nobility under Aurangzeb, New Delhi, 2016, में लेखन ने लिा है कि किस प्रकार 18वीं शदी में भरतपुर के किले की स्थापत्य कला क्यों प्रसिद्ध हुई यह

किला किस तरह से राजपूतों, मराठो व अंग्रेजों के लिए मजबूत स्थापत्य कला के कारण ही अजेय बना रहा इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख इस किताब में किया गया है।

2.प्रो0 पेमाराज : राजस्थान के जाटों का इतिहास (राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक सोजती गेट जोधपुर, वर्ष 2015) में लेखन ने स्पष्ट किया है कि जाटों के स्थापत्य कला अपने समकालीन अन्य राज्यों से ज्यादा मजबूत और टिकाऊ थी इसीलिए भरतपुर किला आज तक यथास्थिति में खड़ा दिखाई देता है।

3.दामोदर लाल गर्ग : जाट शासकों का इतिहास राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक सोजती गेट जोधपुर, वर्ष 2017। इस किताब में लेखने ने जाटों के सभी बड़े और छोटे किलों की स्थापत्य कला का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है जिसके आधार पर इस शोध पत्र को तैयार करने में काफी मदद मिली है।

4.उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास भाग 1–2 राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक सोजती गेट जोधपुर, वर्ष 2016) इस किताब में जाट शासकों के राजनैतिक स्थिति के साथ साथ जाटा राजाओं द्वारा निर्मित किलों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है और बताया गया है कि भरतपुर किले को बाहरी कच्ची दीवार अत्यन्त मजबूती प्रदान करती थी।

5.कु0 नटवर सिंह : महाराजा सूरमल (राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक सोजती गेट जोधपुर, वर्ष 2018) इस किताब में लेखक ने स्पष्ट लिखा है कि युवराज सूरजमल इस किले के निर्माण का क्या उद्‌देश्य था इस किताब में इस किले की नक्काशी का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।

6.राजेन्द्र केडिया : जाटरे जाट (राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक सोजती गेट जोधपुर, वर्ष 2017) इस किताब में लेखक ने जाट किलों के विषय के सम्पूर्ण जानकारी विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया और किसी की स्थापत्य कला का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

उद्‌देश्य :

(1) किले की बसावट तथा स्थापत्य कला – इस किले में बुर्जों और दरबाजों के अतिरिक्त राजा सूरजल ने भटलचन्द्र से चाँदपोल तक किसनगढ़ बास बसाया था।[5] 1756 ई0 में इसी वास में श्री हरिदेवजी का मन्दिर बनवाया गया था। यह गढ़ रूपला पायसा, बारहदरी, खेरापति मोहल्ला, दरगाह

लश्करी शाह, गुदड़ी, सोहिया पायसा, कुंडा रूपराम व मोहल्ला कौड़ियान, बड़ा दास, टकसाल, बासन दरवजा, कटला नमक, पांई बाग आदि मोहल्लों में आबाद किया गया था।[6]

(2) पुरोहित चन्द्रभान ने पुरोहित मौहल्ला और फौजदार मोहनराम बरसानिया ने विशाल महल, अश्वशाला, कचहरी बनावाकर बरसानिया बास बसाया था। बासन दरवाजा से राज राजेश्वर तक यादौली के ठाकुर ने बाग तथा मकान बनवाया था। सोम्द्र (समरू) ने एक विशाल मकान बनवा कर घेर समरू आबाद किया था, जिसमें बाद में रेखा नानगा खवास की कचहरी थी और आजकल बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय है। इसी समय घेर नसवासिया आबाद हुआ था।[7]

(3) 1762 ई0 में मथुरा दरवाजे के समीप समसेर बहादुर की स्मृति। में मस्जिद, कुंधा तथा पक्की सराय बनवाई गई थीं। इसी के समीप बजीर नवाब इमादुल्मुल्क की हवेली तथा कचहरी अभी तक बनी है, जिसे पुलिस वार्ड कहते हैं।

(4) महाराजा जवाहर सिंह (1768 ई0) में जवाहर बुर्ज पर बारहरी महल तथा नहीं हम्माम और विजय स्मृति में गोवरधन दरवाजा, दिल्ली दरवाजा बनवाया था।

(5) महाराजा रतनसिंह (1768 ई0) ने जवाहर बुर्ज पर पचदरा बुर्ज पर मचदरा तथा तोसी थाना बनवाया था। इसी पचदरा में रामायण तथा महाभारत की चित्रकारी की गई है।

(7) महाराजा केहरी सिंह (1769 ई0) के शासन काल में नायक (मुख्त्यार) नवल सिंह ने पक्की नवल बुर्ज तथा मथुरा दरवाजे के आस–पास नवलगढ़ आबाद किया था।[8]

(8) महाराजा रणजीत सिंह (1777–1805 ई0) ने जवाहर बुर्ज पर बारहदरी तथा कुछ महल, महाराजा रंधीर सिंह (1805–23 ई0) ने कचहरी, बुर्ज भवन, इन्द्र भवन तथा 1812 ई0 में महल लक्ष्मीरानी बनवाया था और 1816 ई0 में गोविन्द गढ़ आबाद किया था।

(9) महाराजा बलदेव सिंह (1823–25 ई0) ने हमाम के समीप कचहरी, चमन बगीची, खजाना, सुजान गंगा के किनारे पक्के घाट तथा नये श्री लक्ष्मण जी के मन्दिर की नींव डाली थी। दुर्जनलाल ने कचहरी के विशाल परकोटा को पूर्ण कराया था।[9]

(10) महाराजा बलवन्त सिंह (1826–53 ई0) के शासन काल में सेवर में ब्रिटिश सैनिक बैरक तथा राजनैतिक अभिकर्ता (पोलिटिकल एजेन्ट) का निवास, 1840 ई0 में बसन्त महल (पैलेस), कचहरी कलां, कमरा खास, कोठी खास का निर्माण कराया और गंगा मन्दिर व जामा मस्जिद की नींद डालकर धार्मिक साहिष्णुता, उदारता का परिचय दिया था।[10]

(11) महाराज जसवन्त सिंह (1853–63) बाल्यकाल में ब्रिट्रिश सरकार के राजनैतिक अभिकर्ता मेजर मौरीसन ने अनेक निर्माण कार्य कराये। प्रारम्भ में शहर का मुख्य बाजार आगरा की भाँति सकरा व तंग था। उसने पक्की सड़कें तथा नालियाँ बनवाई। इसी समय एजेन्सी इमारत, जिसमें आजकल महारानी श्री जया कालेज हैं, तथा इजलास खास बनवाया गया था।[11]

महाराजा ने श्री लक्ष्मण जी की प्रतिमा प्रस्थापित कराई और किले में महल डयौढ़ी, सेवर में राजभवन, सैनिक छावनी, अजेन्द्र विहारी का मंदिर पक्का कुण्ड, बुर्ज तथा सड़कों का निर्माण कराया था।[12] महाराजा कृष्ण सिंह (1900–29 ई0) ने शहर के पूर्व में दो मील गोल बाग में मोती महल और अन्तिम शासक अजेन्द्र सिंह ने मोती महल को पूर्ण करा कर अपना निवास स्थान बनाया और गंगा जी की प्रतिमा प्रस्थापित कराकर अनेक धार्मिक अनुष्ठान किये थे।[13] जब हम इस किले का आज अध्ययन करते हैं तो इसका जीवन और कला में घनिष्ठ सम्बन्ध दिखता है भारतीयों ने जिस प्रकार लेखनी के माध्यम से जीवन के विविध अनुभवों, विचारों, भावनाओं को इस किले में प्रकट किया उसी प्रकार छैनी–कन्नी और तूलिका के माध्यम के द्वारा भी भरतपुर के जाट शासकों ने स्थापत्यकला, के जो अनुपम एवं महत्वपूर्ण कार्य किये हैं वे इतिहास की लम्बी यात्रा में अति प्राचीन नहीं है। भले ही वर्तमान में उनकी उचित देखभाल व रख रखाव का अभाव है, फिर भी स्थापत्य के ये स्वरूप अभी अपनी विशालता व श्रेष्ठता को सम्भाले हुए है।[13] शोध हेतु ये पाषाण खण्ड और क्षीण रेखायें शत–प्रतिशत ग्रन्थों से भी अधिक बोधक है। जाट स्थापत्य कला के दुर्ग, महल, मन्दिर, स्मारक, मूर्तियाँ, चित्रादि जो विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है उनमें भारतीय जीवन की अक्ष्य निधि समाहित है आज यह किला आगरा से 32 किमी0 दूर मथुरा से 22 किमी0 दूर दिल्ली व जयपुर से 122 किमी0 दूरी है।[14]

ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक वैभव और प्राकृतिक सुषमा के साथ–साथ, कट शैली की बेजोड़ वास्तुकला ने भी भरतपुर की महिमा में चार चाँद लगाये हैं। यहाँ डीग के जल महलों, सुरम्य उद्यानों व विचित्र शैली की मनोहारी फव्वारों, भरतपुर के देवालयों और गोवर्धन की छतरियों में हिन्दू व मुगल स्थापत्य कला का समन्वय एक नवीन जाट वास्तुकला के रूप में विकसित हुआ[15], यहाँ डीग, कुम्हेर, भरतपुर, वैर, बयाना आदि स्थानों पर मैदानी दुर्गों के निर्माण में जाट शासकों ने मौलिक सूझ–बूझ और अद्भूत वास्तुकला विज्ञता का परिचय दिया है।[16] इस किले की आन–बान शान को देखकर प्रत्येक जाट सैनिक में युद्ध के समय अत्यन्त तेज जोश रहता था इसीलिये दुश्मन भागने पर मजबूर होता था।

निष्कर्ष

जाटों की उत्पत्ति, प्राचीनता, विशालता एवं महानता के विषयों की व्याख्या करते हुए उनकी कलात्मक अभिरूचियों का वर्णन इतिहास में नगण्य रहा है। इतिहासकारों ने इस महत्त्वपूर्ण विषय को अछूता छोड़ उनके राजनैतिक उत्थान को ही अधिक प्रकाशित किया है, जबकि इस जाति ने भारतीय इतिहास के अंशान्ति काल में भी अपने राजनैतिक उत्थान के लिए संघर्ष करते हुए भी स्थापत्य कला के क्षेत्र में जो कार्य किये हैं निश्चित रूप से वे उस सम्पूर्ण काल में सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं महान है। स्थापत्य कला एवं वास्तुकला के क्षेत्र में जाटों का महान् कार्य उनके द्वारा निर्मित विशाल एवं अजेय दुर्ग, श्रेष्ठमहल, पवित्र मन्दिर एवं भव्य स्मारकों से परिलक्षित होता है। यदि जाटों के साथ मुगलों के सम्बन्धों को संक्षेप में देखा जाये तो सन् 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् भारत में राजनैतिक संघर्ष एवं अशान्ति काल में सर्वोच्चता एवं श्रेष्ठता के लिए अनेक जातियों में संघर्ष हुआ, इस संघर्ष में जाटों ने सभी जातियों एवं बाहरी शक्तियों पर भी अपनी अजेयता एवं श्रेष्ठता की छाप छोड़ी। संघर्ष और शत्रु सेना से लोहा लेने के लिए जाटों ने अनेक स्थानों पर अति सदृढ़ एवं अजेय दुर्गों का निर्माण किया। दुर्गों का निर्माण जाटों ने अति बुद्धिमता एवं कुशलता से इस प्रकार किया कि तत्कालीन एशिया के श्रेष्ठ सेनापति अहमदशाह अब्दाली (सन् 1760 ई0) एवं विश्व में अपनी श्रेष्ठता की छाप छोड़ने वाले अंग्रेजों (1805 ई0) को भी इन दुर्गों के सामने चार बार पराजय स्वीकार कर वापस जाना पड़ा। इन प्रमुख दुर्गों के स्थापत्य का उल्लेख अब तक बहुत ही कम किया गया है।

लेकिन आज भारत में ही नहीं अपितु दुनियां के दुर्गों में भरतपुर दुर्ग अद्वितीय स्वरूप का है। किसी न किसी किले (फोर्ट) पर कभी न कभी एक से अधिक विजेताओं की पताकाऐं फहराई गई है किन्तु सतत् और एक ही पताका फहराने का गर्व व गौरव इसी एक भरतपुर किले को प्राप्त रहा है। किले, गढ़ी या दुर्ग पठार मैदान में तो कहीं दोनों, पहाड़, पहाड़ियों पर बने मिलेंगे। कहीं, पहाड़ियों से घिरी घाटियों में स्थित होंगे। परन्तु ऐसी जगह जहाँ दूर पास से पानी सिमटकर कटोरे की शक्ल अख्तयार कर लेता हो, जहाँ पर स्थित किला दूर से तो क्या, पास से भी दिखाई न देता हो, ऐसा अप्रतिम, अपराजेय, दुर्गम अनोखा और सुदृढ़ किला सिर्फ भरतपुर में ही आपकों देखने को मिलेगा।

सन्दर्भ

1. बलदेव सिंह : पाण्डुलिपि, पृ0 20, वाक्या राजिस्थान भाग 2, पृ0 49
2. बलदेव सिंह : पाण्डुलिपि, पृ0 30, 42 (निर्माण प्रारम्भ 1743 ई0 दुर्ग पूर्ण) 1750 ई0 और इसके बाद चार वर्ष (1751–54 ई0) तक किले में बसावट का काम पूरा।
3. बलदेव सिंह : पृ0 22–23
4. भजि देस इत कौउत आयौ, ताहि बास बन बीच बसायौ।
   बीच बीच अटकी चहूँ आँई, जोरि मोरचन बुर्ज बनाई।।
   नग्र रूप सब कानन कीनौ, आसपास परिखा करि दीनौ।
   फेरि दुग्ग सरदार सु, थापे थान–थान जिनके करि आवै।।
5. बलदेव सिंह, पृ0 30–33
6. वही, पृ0 31–32
7. कायदाखान : बृज का इतिहास भाग 2 पृ0 79, बुकमैन पृ0 38
8. बलदेव सिंह, पृ0 24, दीक्षित, पृ0 168
9. वाक्या राज, भाग 2, पृ0 181
10. बलदेव सिंह, पृ0 24–25 दीक्षित, पृ0 169
11. दीक्षित, पृ0 179–80

12. रामवीर सिंह वर्मा : भरतपुर का इतिहास, प्रदीप का प्रकाशन भरतपुर वर्ष 2012 पृ0 29

13. उपेन्द्र नाथ शर्मा जाटों का नवीन इतिहास पृ0 39

14. कानूनगो : जाट पृ0 48–49 महाराजा किशोर (बृज) भाग पृ0 168

15. राजस्थान गजेटियर, खण्ड 1 पृ0 134

16. सियासी मख्तूबात, पत्र सं0 2, पृ0 58–60